

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के लिए - 10 सप्ताह वा
70 दिन के लिए पुरुषार्थ की विशेष प्वाइंटस
(ब्रह्मा बाप के 10 कदम)

पहला कदम – ब्रह्मा बाप समान उदारचित बनो

- 1- जैसे साकार ब्रह्मा बाप विशेष उदारचित के गुण से सर्व का उद्धार करने के निमित्त बने, ऐसे फालो फादर करो। मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सब बातों में उदारचित, बड़ी दिल वाले बनो। हर आत्मा की कमियों को समाओ और उन्हें गुण व शक्ति का सहयोग दो।
- 2- उदारचित बनने के लिए सदा इस स्मृति में रहो कि मैं अधिकारी आत्मा हूँ, कभी किसी के भी अधीन नहीं होना। हर प्रकार की अधीनता को समाप्त करने वाली मैं उदाहरण स्वरूप, उद्धारमूर्त, उदारचित आत्मा हूँ, इस स्वमान में रहो।
- 3- उदारचित बनने के लिए ब्रह्मा बाप समान अपने पास सर्व शक्तियों का स्टॉक भरपूर करो। आपका हर संकल्प, हर सेकण्ड दूसरों प्रति हो। मैं मास्टर दाता, वरदाता हूँ, इस स्वमान में रहो।
- 4- महादानी, उदारचित की स्टेज पर स्थित हो तड़फती हुई आत्माओं को जीयदान वा मन की शान्ति दो। अन्दर यही संकल्प इमर्ज हो कि इस आत्मा का कल्याण हो। मैं सर्व के कल्याण के निमित्त विश्व कल्याणी आत्मा हूँ, इस स्वमान में रहो।
- 5- जैसे साकार ने अपने हर कर्म को यादगार बनाया, ऐसे जो कर्म करो वह यादगार बन जाये, इसके लिए जो कर्म करो वह एक की याद में रहकर करो। वृत्ति, दृष्टि और भावना में सबका कल्याण समाया रहे।
- 6- मैं उदारचित, उद्धारमूर्त आत्मा हूँ - इस स्वमान में रह मन्सा द्वारा सर्व शक्तियों का दान , वाणी द्वारा ज्ञान दान और कर्म द्वारा गुणों का दान करो, इससे सिद्धि स्वरूप, वरदानी मूर्त बन जायेंगे।
- 7- हम पूर्वज आत्मायें सर्व का उद्धार करने के निमित्त हैं, इस स्वमान व पोजीशन पर स्थित होकर सर्व आत्माओं को शक्तियों का जल दो। योग की सकाश दो।

दूसरा कदम - ब्रह्मा बाप समान पालनहार बनो।

- 1- जैसे ब्रह्मा बाप ने आप बच्चों को अलौकिक जन्म देने के साथ ऐसी पालना दी जो सबके मुख से यही आवाज निकलता “मेरा बाबा”। ऐसे हर एक से मेरेपन की भासना आये, इसको कहा जाता है बाप समान। जो सम्पर्क में आये उसे रिलेशन की अनुभूति कराओ फिर कनेक्शन सहज हो जायेगा।
- 2- आप जिनके भी निमित्त बनते हो उनकी ऐसी पालना कर बड़ा करो जो वे प्रेम और पालना द्वारा अविनाशी वसे के अधिकारी बन जायें। उन्हें ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो वे सदा अपने को विघ्न-विनाशक, शक्ति सम्पन्न हेल्दी और वेल्दी अनुभव करें।
- 3- सर्व की पालना करने के लिए अपना जगतमाता, ज्ञान गंगा वा महादानी, वरदानी रूप सामने लाओ। इसी स्वरूप में स्थित होकर किसी भी आत्मा को दृष्टि देंगे तो उनको वरदानों की प्राप्ति हो जायेगी। कल्याणकारी भावना से कैसी भी अपकारी आत्मा उपकारी बन जायेगी।
- 4- जैसे माँ बच्चों की कमजोरियों को वा कमियों को नहीं देखती, उसको उसे ठीक करने का ही रहता है। माँ में

दो विशेष शक्तियां सहन करने और समाने की होती हैं। ऐसे हर आत्मा की पालना करने के लिए यह दोनों शक्तियां यूज करो तो सफलता जरूर होगी।

- 5- जैसे आपने साकार वा आकार रूप में विशेष पालना ली है अब वैसी ही पालना सभी की करनी है। ध्यार और शान्ति, इन दो बातों द्वारा सबकी पालना करो। जो भी आपके सम्पर्क में आये वह अनुभव करे कि ऐसा ध्यार तो हमको न कभी मिला, न कभी देखा।
- 6- जिन्हें अलौकिक जन्म देने के निमित्त बने हो उन्हें ऐसी पालना दो जो वे आपकी छत्रछाया के नीचे सेफ्टी का अनुभव करें। आपके पास आते ही उन्हें हर प्राब्लम का हल मिल जाए। सहारे दाता बनकर नहीं, निमित्त समझकर सहारा दो, यही पालना की विधि है।
- 7- जैसे वाणी द्वारा सेवा करते हो ऐसे आपकी चलन और चेहरा देखकर सबके दिल से वाह-वाह के गीत निकले, उनकी दुआयें लेते और सर्व को दुआयें देते चलो, यही है रूहानी पालना करना। ऐसी पालना द्वारा पूरे संगठन को शक्तिशाली बनाओ।

तीसरा कदम - ब्रह्मा बाप समान सबके शुभ चिंतक, शुभ भावना, शुभ कामना सम्पन्न बनो

- 1- जैसे ब्रह्मा बाप ने अपनी शुभचिंतक वृत्ति से सारे विश्व की सेवा की, सर्व के प्रति शुभ कामना और शुभ भावना रखी, ऐसे फालो फादर करो। अपने शुभ संकल्प की किरणें सूर्य के समान विश्व में चारों ओर फैलाओ।
- 2- शुभ-भावना अर्थात् शक्तिशाली संकल्प। किसी भी आत्मा के प्रति वा बेहद विश्व की आत्माओं के प्रति शुभ भावना रखना अर्थात् शक्तिशाली शुभ और शुद्ध संकल्प करना कि इस आत्मा का कल्याण हो जाए। इसके लिए दो बातों पर अटेन्शन रहे - 1-एकान्त 2- एकाग्रता।
- 3- जो भी वैरायटी प्रकार की आत्मायें सम्बन्ध-सम्पर्क में आती हैं उन्हें शुभचिंतक वृत्ति से हिम्मत के पंख दो। चिंता की चिंता पर रहने वाली आत्माओं के हिम्मत, उमंग-उत्साह के पंख कमजोर हो गये हैं आपकी शुभ भावना उनके पंखों में ऐसी शक्ति भर देगी जो वह उड़ने लगेंगे अर्थात् सहयोगी बनेंगे।
- 4- ब्राह्मण परिवार के बीच एक दो के प्रति अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना द्वारा उन्हें परिवर्तन करने में सहयोगी बनो, उनके संस्कारों की कमजोरी को जानते हुए भी स्नेह और सहयोग की शक्ति द्वारा सहयोगी बनो। एक दो को सहयोग का हाथ मिलाओ। शिक्षा नहीं दो, स्नेह भरा सहयोग दो। न्यारे नहीं बनो, किनारा नहीं करो, सबके सहारे बनो।
- 5- शुभचिंतक बन सबको खुशी की, सहारे की, हिम्मत के पंखों की, उमंग-उत्साह की प्राप्ति कराओ। अपनी शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह से दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाने की सेवा करो। गिरे हुए को गिराओ नहीं, ऊंचा चढ़ाओ। कमजोरी देखते देखो नहीं, उमंग दो, सहयोग दो।
- 6- अपनी वृत्ति को शुभ भावना से ऐसा भरपूर करो जो लोगों को वायब्रेशन आये कि कोई शान्ति का पुंज शान्ति की किरणें दे रहा है। इसके लिए अपने मन को एकाग्र वृत्ति से, शुभकामना, परोपकारी भावना से सदा भरपूर रखो।
- 7- शुभ भावना और शुभ कामना पुण्य का खाता बढ़ाती है, इसके लिए व्यर्थ सुनना, सुनाना और सोचना बन्द करो। शुभचिंतक बनकर बुरी बात को भी अच्छाई में परिवर्तन कर दो। सदा भाव और भावना श्रेष्ठ रखो।

चौथा कदम - ब्रह्मा बाप समान निमित्त और निर्मान बन सबको सम्मान दो।

- 1- जैसे साकार रूप में निमित्त बन हर कर्म संयम के रूप में करके दिखाया। निर्मान बन बच्चों को रिगार्ड देकर राय-सलाह दी। ऐसे संयम प्रमाण एक दो को रिगार्ड दो। सदा यह स्लोगन याद रहे कि जैसी मुझ निमित्त आत्मा की वृत्ति होगी वैसा वायुमण्डल बनेगा।
- 2- जब किसी आत्मा को बाप द्वारा मिला हुआ खजाना देने के निमित्त बनते हो तो यही स्मृति रहे कि बाप से लिया हुआ खजाना दे रहे हैं। इससे श्रेष्ठ स्वमान का नशा भी रहेगा और नम्रता भी रहेगी।
- 3- जैसे बाप नम्रता से बच्चों के सेवाधारी बने, जितना ऊंचे उतने ही निर्मान, यह बैलेन्स रखो तो कभी नुकसान नहीं होगा। स्वयं को झुकाना ही विश्व को अपने आगे झुकाना है।
- 4- निमित्त भाव की विधि से सेवा में वृद्धि करो। निमित्त बनने के साथ सबके स्नेही भी बनो। स्नेह की कमी रहमदिल और नम्र बनने नहीं देती लेकिन कहीं-कहीं अति स्नेह के कारण निर्मानता का गुण भी नुकसान करता है, इसलिए निर्मानता के साथ मालिकपन का नशा भी रखो।
- 5- मैं मास्टर विश्व निर्माता हूँ, इस स्वमान में रहकर हर संकल्प और कर्म करो तो निर्मानता वा सरलता का गुण स्वतः आ जायेगा। निमित्त समझकर सेवा करेंगे तो लगाव झुकाव से सहज किनारा हो जायेगा।
- 6- निर्मान बनना ही स्वमान है, यही सर्व द्वारा मान प्राप्त करने का सहज साधन है। यह झुकना नहीं है लेकिन सर्व को अपनी विशेषता और प्यार में झुकाना है।
- 7- निमित्त समझने से करावनहार बाप की याद रहेगी और करावनहार स्वामी सदा ही श्रेष्ठ कार्य कराते रहेंगे। इसलिए ट्रस्टी हूँ, निमित्त हूँ, इस स्मृति से सदा हल्के रहो तो निर्णय शक्ति समय पर ठीक कार्य करेगी और सफलता मिलती रहेगी।

पांचवा कदम - ब्रह्मा बाप समान अचल-अडोल, बेफिक्र बादशाह बनो।

- 1- जैसे ब्रह्मा बाप सदा निश्चयबुद्धि होने के कारण बेफिक्र बादशाह की स्थिति में रहे, किसी बात में क्वेश्चन मार्क का टेढ़ा रास्ता लेने के बजाए कल्याण की बिन्दी लगाई, एक बल एक भरोसा इसी आधार पर अचल-अडोल, एकरस स्थिति बनाई, ऐसे फालो फादर करो।
- 2- सदा निश्चय रहे कि बाप हमारा रक्षक है, कल्याणकारी है, किसी भी बात में हमारा अकल्याण हो नहीं सकता। सदा यही उमंग रहे कि हमारी विजय हुई पड़ी है। नशा रहे कि विजय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है तो बेफिक्र बादशाह रहेंगे।
- 3- नॉलेजफुल होकर हर कर्म के परिणाम को जानकर कर्म करो तो निश्चय और विजय की समानता बेफिक्र बादशाह बना देगी।
- 4- कैसा भी वायुमण्डल हो उसे देखकर या किसी के कहने से कभी अपने में, अपने कर्म प्रति दुविधा न हो कि पता नहीं मैं राइट हूँ वा रांग हूँ, मन में सदा निश्चय रहे कि मैं सफलतामूर्त हूँ। इस निश्चय के आधार पर अचल-अडोल बेफिक्र बादशाह बनो।
- 5- सदा निश्चय हो कि स्वयं भगवान मेरा साथी है। कभी जरा भी बेसहारे व अकेलेपन का संकल्प मात्र भी अनुभव न हो। हर कार्य करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद की वैराग्य वृत्ति रहे तो अचल-अडोल बन जायेंगे।
- 6- करावनहार बाप है, मैं निमित्त करनहार हूँ, यह स्मृति डबल लाइट बेफिक्र बादशाह बना देगी। जब बेफिक्र बादशाह

बनेंगे तब मायाजीत, कर्मेन्द्रिय जीत, प्रकृतिजीत बन सकेंगे।

- 7- जो कुछ भी होता है - साइडसीन है। साइडसीन को देखकर मंजिल को छोड़ा नहीं जाता। चलते चलो, पार करते चलो तो मंजिल समीप अनुभव होगी। नर्थिंगन्यु की स्मृति से अचल-अडोल बनो, किसी भी दृश्य को देखकर हिलने के बजाए वातावरण को पावरफुल बनाने के निमित्त बनो।

छठा कदम - ब्रह्मा बाप समान एकान्तप्रिय के साथ मिलनसार बनो।

- 1- जैसे ब्रह्मा बाबा सदा एकान्त में ज्ञान मनन वा एक बाप की याद में मगन रहने के कारण रूहानियत की स्थिति में सम्पन्न रहे और बच्चों से मिलने का भी अनुभव कराया। ऐसे प्रतिदिन एकान्त में रमण भी करो और मिलनसार भी बनो।
- 2- अपने दिल की लगन से बीच-बीच में एकान्तवासी बनने का समय निकालो। लेकिन एकान्त में रमणीकता गायब न हो। दोनों समान और साथ-साथ रहें।
- 3- एकान्तप्रिय बनना माना यह नहीं कि मिलने से दूर रहना। कोई भी बात अति में अच्छी नहीं होती। एक गुण तूफान मिसल हो, दूसरा मर्ज हो तो अच्छा नहीं, इसलिए दोनों का बैलेन्स रहे।
- 4- एकान्तप्रिय बनने के लिए सर्व सम्बन्धों की सर्व रसनायें एक से लो। एकाग्र होना अर्थात् एक ही संकल्प में टिक जाना, एक ही लगन में मगन हो जाना, अब इस अभ्यास को बढ़ाओ।
- 5- एकान्तप्रिय बनना माना किनारा करना नहीं लेकिन एक की याद में रहना और अपने आत्मिक स्वरूप द्वारा साइलेन्स की शक्ति का विकास करना। एकान्तप्रिय बन अपने संकल्प शक्ति को शुद्ध और श्रेष्ठ बनाओ।
- 6- एकान्तप्रिय बनने से मनन शक्ति बढ़ेगी, माया के विघ्नों से सेफ्टी रहेगी, दूषित वायुमण्डल से बच जायेंगे। तो एकान्तप्रिय बनने का प्रोग्राम बनाओ। अमृतवेले विशेष एकान्त में अन्तर्मुखी रहने का अभ्यास करो।
- 7- जैसे ब्रह्मा बाप ने एकान्तप्रिय बन एकाग्रता के अभ्यास द्वारा साइलेन्स की शक्ति प्राप्त कर अनेक आत्माओं को जीयदान दिया। ऐसे फालो फादर करो। लाइट-माइट हाउस बन अनेक भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की अनुभूति कराओ।

सातवां कदम - ब्रह्मा बाप समान उपराम और नष्टोमोहा बनो

- 1- जैसे ब्रह्मा कहते बच्चे यह तन मेरा नहीं, मैंने तो बाबा को लोन पर दिया है, यह हुसैन का घोड़ा है। यह सम्बन्धी भी मेरे नहीं, मैं तो स्वयं उनका बच्चा हूँ, इसी स्मृति से बाबा डबल लाइट बने। ऐसे फालो फादर कर देह और देह के सम्बन्धों से उपराम व नष्टोमोहा बनो।
- 2- जैसे बापदादा पुराने शरीर का आधार लेते हैं, शरीर में फंस नहीं जाते, ऐसे कर्म के लिए आधार लो और फिर अपने फरिश्ते स्वरूप में स्थित हो जाओ। इसको कहा जाता है मेहमान और महान। इससे उपराम और नष्टोमोहा बन जायेंगे।
- 3- इस पुरानी देह को बापदादा द्वारा मिली हुई अमानत समझकर सेवा में लगाओ। यह देह मेरी नहीं, सेवार्थ अमानत है। यह समझकर देह के भान से न्यारा बनो तो बाप समान उपराम वा नष्टोमोहा बन जायेंगे।
- 4- नष्टोमोहा की निशानी है न किसी से घृणा हो, न किसी से लगाव वा झुकाव हो। अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो, बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी होकर देखो तो कर्मबन्धन से न्यारे, नष्टोमोहा हो जायेंगे।

- 5- प्रवृत्ति में रहते सदा यह स्मृति में रहे कि मैं कमल आसन पर विराजमान आत्मा हूँ, कभी विकारों रूपी पानी वा कीचड़ की बूंद स्पर्श न करे। प्रवृत्ति में सम्बन्ध के कारण नहीं रहते लेकिन सेवा के लिए रहे हुए हैं, इस स्मृति से नष्टोमोहा और उपराम बनो।
- 6- “एक बाप दूसरा न कोई” इस स्मृति से नष्टोमोहा और उपराम बनो। बाप ही संसार है, सर्व सम्बन्ध और सर्व प्राप्तियां बाप से हो गई। जब सब कुछ मिल गया तो बुद्धि और किसी में जा नहीं सकती।
- 7- परिवार में सेवा का पार्ट बजाते ट्रस्टी होकर रहो। मैं पुरुष हूँ, यह स्त्री है - यह भान स्वप्न में भी न आये। आत्मा भाई-भाई है, न कि स्त्री पुरुष, यह निमित्त मात्र सेवा अर्थ सम्बन्ध है। बाकी कम्बाइन्ड रूप आप और बाप हो, इस स्मृति से नष्टोमोहा और उपराम बनो।

आठवां कदम - ब्रह्मा बाप समान प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले बनो

- 1- प्योरिटी की पर्सनैलिटी के आधार से ब्रह्मा बाप वन नम्बर की पर्सनैलिटी की लिस्ट में आ गये। तो फालो फादर करो। स्वयं को मन, वाणी और कर्म में सम्पूर्ण प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले बनाओ।
- 2- पवित्रता ब्राह्मण जीवन का वरदान है, अपनी निजी वस्तु है। आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, सदा इस सम्मान में स्थित रह प्योरिटी की पर्सनैलिटी वा अथॉरिटी का अनुभव करो।
- 3- जैसे अगरबत्ती की खुशबू खींचती है, वैसे आप द्वारा सबको प्योरिटी की खुशबू का अनुभव हो। स्वयं का ऐसा स्वरूप बनाओ तो अब तक जो सेवा में एनर्जी और मनी लगानी पड़ती है वह काम आपके प्योरिटी की पर्सनैलिटी करेगी।
- 4- परमपूज्य बनने का आधार प्योरिटी की पर्सनैलिटी है। जिसकी वृत्ति, दृष्टि और कृति में जरा भी अपवित्रता की चंचलता नहीं है वही वर्तमान समय भी पूज्य अर्थात् श्रेष्ठ हैं और अन्त में भी पूज्य के रूप में विश्व के आगे प्रत्यक्ष होंगे।
- 5- सारे दिन में जो भी बातें देखते वा सुनते हो, अगर आपके काम की नहीं हैं तो सुनते हुए न सुनो, देखते हुए न देखो अर्थात् किसी की व्यर्थ बुराई को टच नहीं करो तब कहेंगे सच्चे वैष्णव वा प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले।
- 6- पवित्रता का अर्थ है - सदा बाप को कम्पैनिशन बनाना और बाप की कम्पनी में रहना। आत्माओं की कम्पनी में रहते बाप की कम्पनी नहीं भूलना तब पवित्रता की पर्सनैलिटी वाले बन सकेंगे।
- 7- अपने अनादि और आदि गुण के रूप से पवित्रता को अपनाओ तब विधिपूर्वक पूज्य बनेंगे। मन, वाणी और कर्म के साथ स्वप्न भी पवित्र हों, क्रोध के अंश रूप में भी व्यवहार न हो, ईर्ष्या आवेश के वश कर्म वा बोल न निकलें तब कहेंगे बाप समान प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले।

नवां कदम - ब्रह्मा बाप समान देह में रहते विदेही (अशरीरी) बनने का अभ्यास करो।

- 1- जैसे बाप सर्व के स्नेही तब बने जब देह में रहते विदेही बने। ऐसे विदेही बनने का अभ्यास करो। जैसे वस्त्र उतारना और पहनना सहज है, ऐसे अभी-अभी शरीर रूपी वस्त्र धारण किया, अभी-अभी उतारा, यही मुख्य पुरुषार्थ करो तो मुख्य रत्नों में आ जायेंगे।
- 2- एक सेकण्ड में निराकार और एक सेकण्ड में साकार - अब ऐसी ड्रिल करो। आवाज में आते भी आवाज से परे रहने का अभ्यास करो। यही विदेही स्थिति का अभ्यास है, जिससे कर्मातीत स्थिति की समीपता का अनुभव होगा।

- 3- इस आकृति (देह) के अन्दर जो आकर्षण रूप आत्मा है उसको देखने का अभ्यास करो। स्वयं की वा दूसरों की आकृति को देखते हुए भी न देखो, देह की स्मृति से परे विदेही रहने का अभ्यास करो तो व्यर्थ संकल्प वा कर्म से छूट जायेंगे।
- 4- याद रखो मैं आत्मा बिन्दू हूँ और मेरा बाबा भी बिन्दू है। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति, सर्विस नहीं तो बिन्दु, उसके आगे बुद्धि को चलाने की आवश्यकता नहीं। एक सेकण्ड में साकारी से निराकारी, देह से विदेही बनने की प्रैक्टिस करो तो सर्व व्याधियों से मुक्त हो जायेंगे।
- 5- सब बातों में इज़ी रहो, इज़ी रहने से सब कार्य इज़ी होते जायेंगे और अशरीरी अवस्था का अनुभव भी इज़ी हो जायेगा। सिर्फ जिस संस्कार के कारण यह देह रूपी वस्त्र चिपका हुआ है उस संस्कार से न्यारे बनने का पुरुषार्थ करो तो विदेही अवस्था सहज हो जायेगी।
- 6- जैसे साकार बाप ने एक सेकण्ड के बुलावे पर एवररेडी बनकर दिखाया। ऐसे फालो फादर करो। इसके लिए समय निकालकर देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करते रहो।
- 7- जैसे साकार रूप में बाप के लिए समझते हो कि यह लोन लेकर आये हैं। ऐसे देह और देही बिल्कुल अलग-अलग महसूस हो। यही देह के बन्धन से मुक्त अशरीरी अवस्था है, कर्म करने वाला अलग, कर्म अलग है, यह अनुभव बढ़ाते जाओ।

दसवां कदम - ब्रह्मा बाप समान एवररेडी बनो

- 1- जैसे ब्रह्मा बाप सदा एवररेडी अर्थात् सर्वशक्तियों से सम्पन्न रहे - ऐसे फालो फादर करो। अभी अभी आर्डर हो कि दृष्टि को एक सेकण्ड में रूहानी वा दिव्य बनाओ तो उसमें देह-अभिमान का जरा भी अंश न हो, एक सेकण्ड के बजाए दो सेकण्ड भी न लगे तब कहेंगे एवररेडी।
- 2- बाप समान एवररेडी रहने के लिए अपने हिसाब-किताब रूपी वृक्ष को लगन की अग्नि में समाप्त कर बीजरूप स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो। जब चाहो देहभान रूपी वस्त्र को धारण करो और जब चाहो न्यारे हो जाओ।
- 3- रूहानी सम्बन्ध और सम्पर्क निभाने में एवररेडी बनो। संस्कार मिटाने वा मिलाने में टाइम न लगे। जैसे वह रास करते हो ऐसे बाप के संस्कार से संस्कार मिलाने की रास, आपस में श्रेष्ठ संस्कार मिलाने की रास करने में होशियार बनो।
- 4- एवररेडी अर्थात् सर्व शस्त्रधारी। कोई भी शक्ति की कमी वा कमजोरी न हो। सर्वशक्तिमान शिक्षक की शिक्षा से एवररेडी बनो, अपने सर्व लगावों को समेट कर एवररेडी बनो तो विनाश भी रेडी हो जायेगा।
- 5- ब्रह्मा बाप बच्चों को सदा अपने समान एवररेडी बन्धनमुक्त देखना चाहते हैं। सम्पूर्ण बनना अर्थात् किनारा छोड़ना और एक अविनाशी बाप को सहारा बना लेना। किसी भी व्यक्ति, वैभव या वस्तु को सहारा नहीं बनाओ, इसी को कहा जाता है एवररेडी, कर्मातीत।
- 6- एवररेडी अर्थात् सदा अन्तिम समय का आह्वान करते स्वयं को तैयार रखना। अपने को सर्वगुण सम्पन्न बनाना। सम्पन्न स्टेज ऐसी हो जो सिर्फ एक कदम उठाने की देरी हो। ऐसे एवररेडी बाप समान बनने के लिए तीन प्राप्तियां सदा अपने साथ रखो: 1-लाइट 2-माइट और 3-डिवाइन इन्साइट।
- 7- जैसे मिलेट्री वालों का बिस्तरा हर समय तैयार रहता है, ऐसे आपका यह संकल्पों रूपी बिस्तरा सदा तैयार रहना चाहिए, एक सेकण्ड में अपने व्यर्थ संकल्पों को स्टॉप कर लो, ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर हो तब अन्त समय में अपनी कमजोरियों को प्रायः लोप कर एवररेडी बन सकेंगे।

— ओम् शान्ति —